



SB-0112

Second Year B. A. Examination

March / April – 2011

Hindi : Paper - II

(हिन्दी नाट्य साहित्य)

Time : Hours]

[Total Marks : 70

सूचना : (9)

नीचे दृशादेव निशानीवाणी विगतो उत्तरवडी पर अवश्य कपवी. Fillup strictly the details of signs on your answer book.	Seat No. :
Name of the Examination :	<input type="text"/>
← S. Y. B. A.	<input type="text"/>
Name of the Subject :	<input type="text"/>
← Hindi - Paper - 2	<input type="text"/>
← Subject Code No. : <input type="text"/> 0 <input type="text"/> 1 <input type="text"/> 1 <input type="text"/> 2	← Section No. (1, 2,.....) : <input type="text"/> Nil
Student's Signature	

(२) सभी प्रश्नों के अंक समान है।

9 “करफ्यू’ दाम्पत्य-जीवन की कटु सच्चाई को उजागर करनेवाला नाटक है” 9४
- समीक्षा कीजिए

अथवा

9 ‘करफ्यू’ नाटक के आधार पर आधुनिक नारी के रूप में मनीषा का 9४
चरित्रांकन कीजिए।

२ “सीमा-रेखा’ एकांकी में जनता, जन-प्रतिनिधि और प्रशासन की सीमारेखा 9४
को प्रदर्शित किया गया है” - समीक्षा कीजिए।

अथवा

२ ‘रीढ़ की हड्डी’ एकांकी के आधार पर उमा की चारित्रिक विशेषताओं 9४
की चर्चा कीजिए।

३ ‘करफ्यू’ नाटक के आधार पर कविता की चरित्रगत विशेषताओं पर 9४
प्रकाश डालिए।

अथवा

३ एकांकी के तत्त्वों के आधार पर ‘आखेट’ एकांकी की समीक्षा कीजिए। 9४

SB-0112]

1

[Contd...

- ४ टिप्पणीयाँ लिखिए : १४
- (अ) 'करफ्यू' नाटक में संवाद योजना।
- अथवा
- (अ) 'करफ्यू' नाटक में गौतम का चरित्र।
- (ब) 'अधिकार का रक्षक' शीर्षक की सार्थकता।
- अथवा
- (ब) चारुमित्रा का चरित्र।
- ५ ससंदर्भ व्याख्या कीजिए : १४
- (क) "कैसी बात करते हैं! आप पर अविश्वास तो मैं स्वप्न में भी नहीं कर सकती अपने पर शायद उतना न हो, आप पर है।"
- अथवा
- (क) "पुरुष जिसके बिना स्त्री का कोई अस्तित्व नहीं, पुरुष जिसकी चाह हर स्त्री अपना आत्मा में पालती है, पुरुष जिसकी गोद ही स्त्री की मुक्ति है।"
- (ख) "जब किसी व्यक्ति में शक्ति की क्षमता होती है, तो बुरे मार्ग से अच्छे पर और अच्छे मार्ग से बुरे मार्ग पर जाने में विलंब नहीं लगता।"
- अथवा
- (ख) "जी हाँ, जाइये। जरूर चले जाइये। लेकिन घर जाकर यह पता लगाइयेगा कि आपके लाडले बेटे के रीढ़ की हड्डी भी है या नहीं... यानी बैकबोन, बैकबोन..."
- (ग) "नाटक तो जीवन का प्रतिबिम्ब ही है। पहले जीवन, फिर नाटक। बिना जीवन बदले, नाटक बदलने की बात असंभव है, मूर्खतापूर्ण है...।"
- अथवा
- (ग) "हाँ मैं पागल हो गया हूँ... मेरे कागज दे दो, मैं 'आवाज' नहीं बचूँगा..."